REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थ कोटा स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर दबाव

शबनम परवीन[1] , डॉ. मुरलीधर मिश्रा[2]
[1] एम.एड. छात्रा, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.

सारांश

राजस्थान राज्य के कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर दबाव का अध्ययन करने के लिए कोटा जिले के विभिन्न कोचिंग संस्थानों में वर्ष 2016-17 की अवधि में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से 300 विद्यार्थियों का चयन सोदेश्यपूर्ण ढंग से किया गया। न्यादर्श चयन की सहायक विधि के रूप में 'स्नोबॉल विधि' का प्रयोग किया गया। उपकरण के रूप में 'मिश्र एवं पाण्डेय' द्वारा विकसित एवं मानकीकृत 'विद्यार्थी दबाव मापनी' का प्रयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए सामान्य वर्णनात्मक सांख्यिकी के अन्तर्गत प्रतिशत विश्लेषण, रेखाचित्रीय (वृत्तचित्र) प्रस्तुतीकरण एवं सामान्य वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष अनुसार कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से बहुत ही कम विद्यार्थियों पर दबाव का स्तर उच्च पाया जाता है। हालांकि उच्च एवं औसत दोनों स्तर के दबाव स्तर वाले विद्यार्थियों का समेकित प्रतिशत लगभग 15.34 होना दबाव के दुष्प्रभावों को देखते हुए गम्भीर स्थिति का अभिसूचन करता है।

मुख्य शब्दावलीः व्यावसायिक पाठ्यक्रम, कोचिंग संस्थान, दबाव स्तर, स्नोबॉल विधि, सामान्य वर्णनात्मक सांख्यिकी

पृष्ठभूमि

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत या इस शिक्षा स्तर को हाल ही में पार कर चुके विद्यार्थियों पर बढ़ता दबाव एवं तनाव शैक्षिक जगत के लिए एक प्रमुख चुनौती है। इस चुनौती को देखते हुए शिक्षा एवं मनोविज्ञान दोनों से सम्बद्ध अध्येताओं ने विद्यार्थियों पर दबाव एवं तनाव स्तर को अपने अध्ययन का विषय बनाया है। इनमें गुप्ता एवं खान (1987) के अनुसार अकादमिक दबाव शैक्षणिक विफलता से जुड़ी कुछ अनुमानित हताशा या ऐसी विफलता की संभावना के बारे में जागरूकता से उत्पन्न एक मानसिक संकट है। सिंह (2005) के अनुसार शैक्षिक विशेषज्ञों में यह आम सहमति है कि बोर्ड और प्रतिस्पर्धी परीक्षा की वर्तमान संरचना को छात्रों के अनुकूल प्रणाली से बदला जाना चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता को कम करने के बिना छात्रों पर प्रवेश परीक्षा के भारी दबाव को कम करने के लिए कुछ किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों पर बढ़ रहा दबाव एक मुद्दा के रूप में उभरा है। मेनेगा एवं चंद्रसेकरन (2014) ने दबाव को शिक्षा में वर्तमान पीढ़ी के अधिगमकर्ताओं के लिए बड़ी चुनौती माना।

वर्तमान में व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक होने के कारण विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रवेश हेतु प्रतिस्पर्धा का वातावरण निर्मित हो गया है तथा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे-

सी.पी.एम.टी., आई.आई.टी., पी.एम.टी., नेट, स्लेट, आई.ए.एस., एम.बी.ए. प्रवेश परीक्षा आदि में सफलता प्राप्त करना आवश्यक हो गया है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु या रोजगार के अवसर के लिए वैकल्पिक शिक्षण व्यवस्था उभर रही है। समानान्तर शैक्षिक प्रणाली औपचारिक शिक्षा के साथ चलने वाली प्रक्रिया है जो विद्यार्थी को वर्तमान शैक्षिक प्रणाली के इतर सुविधाएँ प्रदान कर उसकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग करती है। इसके द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों के लिए निर्धारित प्रवेश परीक्षाओं के लिए तैयार किया जाता है। प्रायः समानान्तर शैक्षिक प्रणाली का नेतृत्व कोचिंग संस्थानों के द्वारा किया जा रहा है।

विद्यार्थियों द्वारा प्रतियोगी परीक्षाओं, मेडिकल तथा इंजीनियरिंग उत्तीर्ण करने हेतु कोटा उत्कृष्ट कोचिंग संस्थानों की दृष्टि से राष्ट्रीय मानचित्र पर उभरा है। परिणामत: इन कोचिंग संस्थानों में तैयारी करके प्रतिवर्ष उत्कृष्ट मेडिकल तथा इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। कोचिंगसंस्थानों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों का आरम्भिक शैक्षिक लब्धि स्तर भिन्न-भिन्न होता है। इन संस्थानों में प्रविष्ट सभी विद्यार्थी कोचिंग संस्थाओं द्वारा संचालित शिक्षण-अधिगम-अभ्यास प्रक्रिया से आधार प्राप्त कर प्रतिस्पर्धी योग्यता अर्जित करते हुए उत्कृष्ट मेडिकल तथा इंजीनियरिंग संस्थानों में प्रवेश लेने का प्रयास करते हैं। इन विद्यार्थियों से परिवार, समाज एवं स्वयं के साथ ही कोचिंग संस्थानों की सघन अपेक्षाएँ रहती हैं।

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर बढ़ता दबाव का स्तर समाज के लिए गहरी चिंता का विषय है। आरम्भिक असफलता या संचालित शिक्षण-अधिगम-अभ्यास प्रक्रिया में स्वयं की प्रगति के प्रति आश्वस्त होने का दबाव होने के चलते स्वयं को नुकसान पहुँचाने के समाचार लगातार सुनने और देखने में आ रहे हैं। वर्तमान समय में कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों के विद्यार्थियों द्वारा खुदखुशी की घटनाएँ भी बढ़ी हैं। ऐसे में, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थ कोटा स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर दबाव का स्तर की स्थिति जानने के लिए यह अध्ययन किया गया है।

अध्ययन उद्देश्य

सम्प्रत्ययात्मक पृष्ठभूमि एवं सम्बद्ध साहित्य के विवेचन के आधार पर इस अध्ययन का उद्देश्य 'व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थ कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर दबाव स्तर का अध्ययन करना निर्धारित किया गया।

शोध विधि

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थ कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर दबाव स्तर का यथास्थैतिक रूप में अध्ययन करने के लिए शैक्षिक अध्ययन की सर्वेक्षण विधि उपयोग किया गया है। संकलित प्रदत्तों के आधार पर कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर पाये गये दबाव स्तर का वर्णन करना अभीष्ट होने के कारण सर्वेक्षण अध्ययन की वर्णनात्मक विधि 'सर्वेक्षण वर्णनात्मक विधि' का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्शन एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थ राजस्थान प्रान्त के स्थित कोटा शहर में स्थित विभिन्न कोचिंग संस्थानों में वर्ष 2016-17 की अवधि में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से 300 विद्यार्थियों का चयन उपलब्धता के आधार पर सोदेश्यपूर्ण ढंग से किया गया। न्यादर्श चयन में सहायक विधि के रूप में 'स्नोबॉल विधि' का प्रयोग किया गया।

प्रदत्त स्रोत एवं प्रकृति

प्रदत्त संकलन के लिए प्राथमिक स्रोत का उपयोग किया। प्रदत्तों के स्रोत के रूप में कोटा में स्थित विभिन्न कोचिंग संस्थानों के अध्ययनरत विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

अध्ययन उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन कोटा में स्थित विभिन्न कोचिंग संस्थानों के अध्ययनरत विद्यार्थियों में दबाव के स्तर का मापन करने के लिए डॉ. करुणा शंकर मिश्र एवं डॉ. सत्य प्रकाश पाण्डेय द्वारा विकसित एवं मानकीकृत 'विद्यार्थी दबाव मापनी' का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध में प्राप्त प्रदत्तों के लिए सामान्य 'वर्णनात्मक सांख्यिकी' के अन्तर्गत आवृत्ति विश्लेषण, प्रतिशत विश्लेषण एवं रेखाचित्रीय (दण्डचित्र) प्रस्तुतीकरण का उपयोग किया गया है।

प्रदत्त प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों के अध्ययनरत विद्यार्थियों पर दबाव स्तर सम्बन्धी प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण अग्रांकित सारणी एवं दण्डचित्र द्वारा किया गया है-

सारणीः कोटा स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर दबाव (कोष्ठक में प्रतिशत)

वर्ग	दबाव स्तर			योग
	उच्च	*औसत*	*निम्न*	
विद्यार्थी	2 (0.67)	44 (14.67)	254 (84.67)	300

दण्डचित्रः कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर दबाव का स्तर

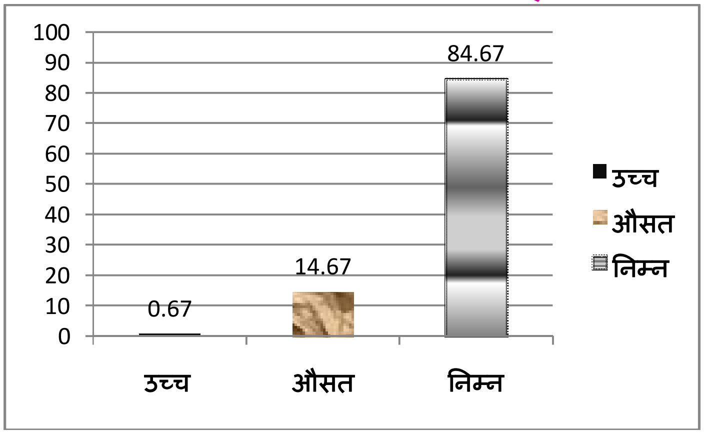

उपर्युक्त सारणी व दण्डचित्र द्वारा कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर दबाव स्तर सम्बन्धी प्रदत्तों को प्रदर्शित किया गया है। इसके अन्तर्गत कुल विद्यार्थियों में से केवल 0.67 प्रतिशत पर उच्च दबाव व 14.67 प्रतिशत पर औसत दबाव व 84.66 प्रतिशत पर निम्न दबाव पाया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से बहुत ही कम विद्यार्थियों पर दबाव का स्तर उच्च है और अधिकांश विद्यार्थियों पर दबाव का स्तर निम्न है। उच्च एवं औसत दोनों स्तर के दबाव वाले विद्यार्थियों का समेकित प्रतिशत लगभग 15.34 है। इससे यह पता चलता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थ कोटा में स्थित

कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत बहुत ही कम विद्यार्थियों पर उच्च दबाव है। तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थियों पर दबाव का यह स्तर निम्न है। हालांकि उच्च एवं औसत दोनों स्तर के दबाव स्तर वाले विद्यार्थियों का लब्ध समेकित प्रतिशत (15.34) भी दबाव के दुष्प्रभावों को देखते हुए गंभीर स्थिति का अभिसूचन करता है।

शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थ कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से तीन चौथाई से अधिक विद्यार्थियों पर दबाव का स्तर निम्न पाया गया है। लगभग 15.34 प्रतिशत विद्यार्थियों पर दबाव का स्तर औसत या उच्च है। उच्च एवं औसत दबाव वाले विद्यार्थियों की यह संख्या भले ही देखने पर कम लगे लेकिन यह अभिलषित दबाव स्तर (शून्य) से बहुत अधिक है।

शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

किसी भी अनुसंधान की वास्तविक सार्थकता तभी होती है। जब वह शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगी हो। प्रस्तुत अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थ कोटा में स्थित कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में से बहुत ही कम विद्यार्थियों पर दबाव का स्तर उच्च है। लेकिन उच्च एवं औसत दोनों स्तर के दबाव स्तर वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत लगभग 15.34 होना अपने आप में चिंताजनक है। उच्च एवं औसत दबाव वाले विद्यार्थियों की यह मात्रा भले ही संख्यात्मक रूप से कम लगे लेकिन दबाव की मौजूदगी से होने वाले दुष्परिणामों को देखते हुए यह अपेक्षित (शून्य) से बहुत अधिक है। दबावग्रस्त विद्यार्थी का अधिगम-अभ्यास कार्य और अन्य कार्य व्यवहार उनकी दबावग्रस्तता के कारण अवश्य ही प्रभावित होता है। इसलिए इनकी दबावग्रस्तता से संबंधित कारणों का निदान एवं यथोचित उपचार करने के लिए पहल जरूरी है। वस्तुत: दबाव स्तर एक स्थिर बिन्दु नहीं है। कम दबावग्रस्तता का औसत एवं औसत का उच्च में बदलना असम्भव नहीं है। अतः समय-समय पर विद्यार्थी दबावग्रस्तता की जाँच जरूरी है। कई संस्थान अपने यहाँ आवश्यकतानुसार पर्याप्त शिक्षक नहीं रखते हैं, जिससे शिक्षकों के ऊपर अतिरिक्त शिक्षण का भार हो जाता है। फलतः शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते हैं। अतः कक्षा में शिक्षक विद्यार्थी अनुपात का निर्धारण आवश्यक है। कोचिंग संस्थान को समय सारणी का निर्धारण करते समय शिक्षक के ऊपर आने वाले शिक्षण के अतिरिक्त भार को ध्यान में रखना चाहिए। कोचिंग संस्थान विद्यार्थियों पर कक्षाओं व परीक्षणों का अतिरिक्त भार नहीं डालें। प्रत्येक संस्थान में मनोविशेषज्ञ होना चाहिए जो विद्यार्थियों की मनोदशा का सतत आकलन करता रहे। समय-समय पर मनोवैज्ञानिक परामर्शन एवं साइकोथेरेपी कार्यक्रमों का आयोजन और प्रेरणादायक संगोष्ठियाँ हों, जिससे विद्यार्थी अभिप्रेरित रहें। श्रेणी क्रम (रैंक) गिरने पर भी उनकी पढ़ाई में नियमितता बनी रहनी चाहिए। कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अभिभावकों को अपनी अपेक्षाओं को बच्चों पर थौपनी नहीं चाहिए। विद्यार्थियों को कोचिंग संस्थानों की शिक्षण पद्धति और पाठ्यक्रम के दबाव के स्तर को ध्यान में रखकर सीखने की भावना रखनी चाहिए। अभिभावक निरन्तर बातचीत करते हुए विद्यार्थी को प्रेरित करें ताकि उनकी दबाव का स्तर कम हो। कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में दबाव कम करने के लिए कतिपय अन्य प्रयास भी किये जा सकते हैं, यथा- मनोरंजन आधारित कार्यक्रम का संगठन, जीवन-कौशल से सम्बन्धित प्रशिक्षण, व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान, खेलकूद, योगासन एवं ध्यान जैसे कार्यक्रमों का आयोजन आदि। इस प्रकार विविध प्रयासों का संगठन करते हुए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से जुड़ने को इच्छुक प्रतिभाओं के ऊपर दबाव के स्तर को कम किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची:

- आचार्य, एस. (2003). फैक्टर्स अफ्फेक्टिंग स्ट्रेस अमंग इंडियन डेंटल स्टूडेंट्स: इंटरनेशनल पर्सपेक्टिव ऑन डेंटल एजुकेशन. *जर्नल ऑफ़ डेंटल एजुकेशन,* 10:1130-1148.
- अनुपमा, जी. एस. (2004). स्ट्रेस इस ड्यू टू पैरेंटल प्रेशर. *दा टाइम्स ऑफ़ इंडिया,* फेब्रुअरी 24, 7.

- चौहान, डी. (2006). मैनेजिंग स्ट्रेस: एन इंटेग्रेटीव एप्रोच. *प्रोडक्टिविटी,* 3: 223-231.
- कोहन, एस. एंड होबेरमन एच.एम. (1983). पॉजिटिव इवेंट्स एंड सोशल सपोर्ट अस बफर्स ऑफ़ लाइफ चेंज स्ट्रेस. *जर्नल ऑफ़ एप्लाइड सोशल साइकोलॉजी,* 13: 99-125.
- डेवीस, एम, कंडेल डी बी (1981). पैरेंटल एंड पियर इन्फ्लुएंसेस ऑन एडोलैसैंट्स' एजुकेशनल प्लान्स: सम फरदर एविडेंस. *अमेरिकन जर्नल ऑफ़ सोशियोलॉजी,* 87: 363-387.
- दुबे, मृदुला (2014). व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमों से सम्बद्ध शिक्षकों में कार्य दबावग्रस्तता एवं दबाव प्रबन्धन. शिक्षा संकाय, वनस्थली: वनस्थली विद्यापीठ.
- गुप्ता, के. एंड खान, बी.एन. (1987). एन्जाइटी लेवल एज अ फैक्टर इन कांसेप्ट फार्मेशन. *जे. ऑफ़ साइकोलॉजिकल रिपोर्ट,* 31:187-192.
- सिंह, ए. (2005). प्रपोज्ड एक्जामिनेशन रेफोर्मस. अ कॉन्फ्रेन्स रिपोर्ट ऑफ़ सीबीएसई ऑन डिस्ट्रेशिंग एक्जामिनेशन. न्यू देहली, मई: 47-49.
- ज़ट्स, एस. एंड चसिन, एल. (1985). कॉग्निशंस ऑफ़ टेस्ट-अन्सियस चिल्ड्रन अंडर नेचरेलिस्टिक टेस्ट-टेकिंग कंडीशंस. *जर्नल ऑफ़ कंसल्टिंग एंड क्लीनिकल साइकोलॉजी,* 53: 393-401.
- मेनेगा, एस. एंड चंद्रसेकरन, वी. (2014). अ स्टडी ऑन अकेडमिक स्ट्रेस ऑफ़ हायर सेकण्ड्री स्कूल स्टुडेंट्स. *स्कॉलरलीरिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिसिप्लिनेरी स्टडीज,* सेप्टेम्बर-अक्टूबर, II(VII), 1973-1981.

शबनम परवीन
एम.एड. छात्रा , शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.

डॉ. मुरलीधर मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.